सारांश

यात्रा करना मनुष्य के स्वभाव की सहज और आदिम वृत्ति है। मानव का मन निरंतर गतिशीलता और नवीनता चाहता है। मानव सभ्यता के विकास में मनुष्य की यायावरी वृत्ति का अहम् योगदान रहा है। यात्राएं मनुष्य को साहसी बनाती हैं। यात्राएं मनुष्य की जिज्ञासा की तुष्टि का साधन भी होती हैं। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि साहसी यायावरों द्वारा की गई खोजी यात्राओं के माध्यम से ही दुर्गम भूखंडों की खोज हुई, ज्ञान की विलुप्त चीजें मिलीं। प्राचीन काल से ही भारत में अनेक साहसी यात्री जैसे फ़ाहियान आदि आते रहे हैं और यहाँ से अनेक धर्म-प्रचारक विदेशों की ओर जाते रहे हैं। ऐसी यात्राओं ने हमारे देश की संस्कृति को एक नया स्वरूप प्रदान किया।

एक विशिष्ट विधा के रूप में यात्रा साहित्य विधा के विकास का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चंद्र को जाता है। यात्रा वृत्तांत हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है।किसी अपरिचित और नए स्थान की यात्रा कर आने के पश्चात् यात्रा के दौरान सँजोयी स्मृतियों को दूसरों के साथ बाँटने की इच्छा यात्रा वृत्तांतों के लिखे जाने का एक प्रमुख कारण है। साहित्यिक प्रवृत्ति के यायावर रचनाकारों द्वारा जब किसी स्थान विशेष की यात्रा के विभिन्न अनुभवों का आत्मीयता के साथ एक विशिष्ट शैली में वर्णन किया जाता है तो पाठक भी ऐसे वर्णन को पढ़कर उस स्थान विशेष से संबंधित दृश्यों, संस्कृतियों, व्यक्तियों, भाषा आदि से परिचित हो उस स्थान विशेष के प्रति एक आत्मीयता का भाव अनुभव करता है।

यात्रा साहित्य के माध्यम से हम देश और दुनिया के अलग-अलग भागों की विशिष्ट संस्कृति से परिचित होते हैं, वहाँ के लोगों और सामाजिक संरचना से परिचित होते हैं। हिंदी यात्रा साहित्य में भारत देश के विभिन्न भू-भाग ही नहीं अपितु सुदूर विदेशों की यात्रा को आधार बनाकर अनेक यात्रावृत्तों की रचना हुई है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय,

मोहन राकेश, निर्मल वर्मा जैसे विद्वान लेखकों ने उच्च कोटि के यात्रा साहित्य का सृजन किया जिनके माध्यम से हिंदी का यात्रा साहित्य बहुत समृद्ध हुआ है।

विविधता में एकता भारत की सर्वप्रमुख विशेषता है। भारत में विभिन्न प्रकार के समाज, उनकी अलग-अलग बोलियाँ, भाषाएँ, धर्म, संस्कृति, रिवाज़, परम्पराएँ , तौर-तरीके, खान-पान आदि मिलकर सम्पूर्ण राष्ट्र के स्तर पर एक बहुरंगी कोलाज़ का निर्माण करते हैं। पूर्वोत्तर के राज्य भी भारत देश का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। देश की मुख्यधारा से दूर अपनी अलग बोली-भाषा, रहन-सहन, रिवाज़ों और रूप-रंग की वजह से पूर्वोत्तर भारत देश भर में अपनी विविधताओं के लिए प्रसिद्ध है। पूर्वोत्तर भारत भौगोलिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से जितना समृद्ध है, उतना ही सांस्कृतिक एवं लोक कलाओं की दृष्टि से धनी भू-भाग है।

प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत पूर्वोत्तर भारत के राज्यों की जमीनी हक़ीकत को तो बयान करता ही है, साथ ही वहाँ के सामान्य जन-जीवन का आँखों-देखा हाल भी प्रस्तुत करता है। सामान्यतः यह माना जाता है कि पूर्वोत्तर के राज्यों का भारतीय शासन व्यवस्था से मुख्य अंतर्विरोध है। 'पेट्रोल, डीजल, गैस, कोयला, चाय देने वाले पूर्वोत्तर को हमारी सरकार बदले में वर्दीधारी फौजों की टुकड़ियाँ भेजती रही हैं'। इस तथ्य से किसी को इंकार नहीं है, परंतु पूर्वोत्तर भारत का यह एक मात्र यथार्थ नहीं है। वहाँ की जनजातियों के आपसी अंतर्विरोध और भी गहरे हैं। एक जगह जो समुदाय शोषित-पीड़ित दिखता है दूसरी जगह वही शोषक भी है। इस पुस्तक में पूर्वोत्तर के सामाजिक यथार्थ की तटस्थ प्रस्तुति लेखक ने की है। पूर्वोत्तर के समाजों की बदलती संस्कृति, नए-पुराने, भीतरी-बाहरी आदि सब द्वंद्वों को लेखक ने अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि के द्वारा पकड़ा है। भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पूर्वोत्तर के राज्यों के योगदान एवं स्थिति, भारतीय फौज का स्थानीय लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार, उल्फा उग्रवादियों तथा टैक्स वसूली के बीच पिस रही आम जनता की स्थिति, अपनी ज़मीन तथा ज़बान को बचाए रखने का संघर्ष, नागा-कुकी संघर्ष, असमिया-बिहारी संघर्ष, आदिवासियों की भाषायी और सांस्कृतिक समस्या, राजनीतिक स्तर पर विभिन्न संगठनों द्वारा अलग स्वायत्त राज्य की माँग, चाय

बागानों में ठहरे हुए ब्रिटिश काल और उसकी राजनीति, प्राकृतिक संसाधनों के अवैध दोहन व लूट, पूर्वोत्तर राज्यों के प्राकृतिक सौन्दर्य, पर्यावरण, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक वातावरण, लोक-विश्वासों, खान-पान, आम जनता के व्यवहार, वहाँ के इतिहास और भूगोल, इंडिया बनाम पूर्वोत्तर का संवेदनशील मुद्दा, बांग्लादेश, तिब्बत भूटान, चीन देश के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करने वाले नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर आदि राज्यों के विभिन्न शहरों में विदेशियों की घुसपैठ के मध्य आम जन-जीवन आदि अनेक मुद्दों एवं प्रसंगों का जिस सूक्ष्मता, ईमानदारी के साथ वर्णन किया है, वैसा अन्य किसी भी लेखक ने नही किया है। चूंकि लेखक ने साधनहीन होने के कारण और आमजन के मध्य रहकर उनके जीवन और परिस्थितियों को स्वयं झेला है इसीलिए लेखक पूर्वोत्तर भारत के सामाजिक यथार्थ को इतनी गहराई, प्रमाणिकता, संवेदना एवं सच्चाई के साथ अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम हुआ है। इस पुस्तक में पूर्वोत्तर के सामाजिक यथार्थ की तटस्थ प्रस्तुति लेखक ने की है। पाठक इस पुस्तक को पढ़ते हुए ना केवल एक पाठक ही रह जाता है बल्कि स्वयं को लेखक द्वारा की गई यात्रा का भागीदार समझने लगता है। लेखक की भाषा इतनी सशक्त एवं भावप्रवण है कि जो लेखक कहना चाहता है, वह सहज ही पाठक तक संप्रेषित हो जाता है। अंत: में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत का पाठक पूरे मनोयोग से उस स्थान के भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक,भौगोलिक परिप्रेक्ष्यों के साथ तादात्म्य स्थपित कर लेता है और यही तथ्य प्रस्तुत पुस्तक की सफलता का परिचायक है।